इतिहास और राजनीति शास्त्र

नौवीं कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

इतिहास और राजनीति शास्त्र

नौवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

7EZG9S

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA APP' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q. R. Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q. R. Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१७
पुनर्मुद्रण : अक्टूबर २०२०

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

इतिहास विषय समिति

डॉ. सदानंद मोरे, अध्यक्ष
श्री मोहन शेटे, सदस्य
श्री पांडुरंग बलकवडे, सदस्य
श्री बापूसाहेब शिंदे, सदस्य
श्री बाळकृष्ण चोपडे, सदस्य
श्री प्रशांत सरूडकर, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

नागरिक शास्त्र विषय समिति

डॉ. श्रीकांत परांजपे, अध्यक्ष
प्रा. साधना कुलकर्णी, सदस्य
डॉ. मोहन काशीकर, सदस्य
श्री वैजनाथ काळे, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

भाषांतरकार

श्री शशि मुरलीधर निघोजकर
डॉ. प्रमोद शुक्ल

समीक्षक

श्री धन्यकुमार बिराजदार
श्रीमती मंजुला त्रिपाठी मिश्रा

विषयतज्ञ

सौ. वृंदा कुलकर्णी
श्री प्रकाश ना. वाघमारे
श्री साहेबराव स. पाटील

भाषांतर संयोजन

डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी, हिंदी
सौ. संध्या विनय उपासनी
सहायक विशेषाधिकारी, हिंदी

मुखपृष्ठ एवं सजावट

श्री मुकीम शेख

मानचित्रकार

श्री रविकिरण जाधव

अक्षरांकन

मे. निहार ग्राफिक्स, मुंबई

कागज

७० जी.एस.एम. क्रिमवोव

मुद्रणादेश

N/PB/2021 - 22/Qty,-10,000

मुद्रक

M/s.Shripad Offset, Kolhapur

इतिहास और नागरिक शास्त्र अभ्यास गट

श्री राहुल प्रभू
श्री संजय वझरेकर
श्री सुभाष राठोड
सौ. सुनीता दळवी
डॉ. शिवानी लिमये
श्री भाऊसाहेब उमाटे
डॉ. नागनाथ येवले
श्री सदानंद डोंगरे
श्री रवींद्र पाटील
श्री विक्रम अडसूळ
सौ. रूपाली गिरकर
डॉ. मिनाक्षी उपाध्याय
सौ. कांचन केतकर
सौ. शिवकन्या पटवे
डॉ. अनिल सिंगारे
डॉ. रावसाहेब शेळके
श्री मरीबा चंदनशिवे
श्री संतोष शिंदे
डॉ. सतीश चापले
श्री विशाल कुलकर्णी
श्री शेखर पाटील
श्री संजय मेहता
श्री रामदास ठाकर
डॉ. अजित आपटे
डॉ. मोहन खडसे
सौ. शिवकन्या कदेरकर
श्री गौतम डांगे
डॉ. व्यंकटेश खरात
श्री रविंद्र जिंदे
डॉ प्रभाकर लोंढे

संयोजक

श्री मोगल जाधव
विशेषाधिकारी, इतिहास व नागरिकशास्त्र
सौ. वर्षा सरोदे
सहायक विशेषाधिकारी, इतिहास व नागरिकशास्त्र
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

निर्मिति

श्री सच्चितानंद आफळे,
मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री प्रभाकर परब,
निर्मिति अधिकारी
श्री शशांक कणिकदळे,
सहायक निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक

श्री विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
　　　　भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
　　　　द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
　　　　उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
　　　　गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
　　　　भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
　　　　जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

विद्‌यार्थी मित्रो,

नौवीं कक्षा की इतिहास पाठ्‌यपुस्तक में इ.स. १९६१ से २००० तक की कालावधि का समावेश किया गया है। यह पुस्तक आपके हाथों में देते हुए हमें आनंद हो रहा है। इतिहास के पाठ्‌यक्रम को अधिक-से-अधिक अद्‌यतन करने के प्रयत्नों का एक भाग अर्थात यह पाठ्‌यपुस्तक है।

इस पाठ्‌यपुस्तक में इ.स. १९६१ के बाद भारत में हुए सामाजिक, सांस्कृतिक और अन्य क्षेत्रों के विकास की समीक्षा की गई है अर्थात यह समीक्षा परिपूर्ण नहीं है; इसका भान रखना आवश्यक है। पाठ्‌यपुस्तक के पृष्ठों की मर्यादा को ध्यान मे रखते हुए साधारण तौर पर चालीस वर्षों की सामान्य समीक्षा की गई है। उद्‌योग और कृषि के समावेशवाले भारत की आर्थिक नीतियों का, विज्ञान और प्रौद्‌योगिकी में हुए परिवर्तनों, महिलाओं के सक्षमीकरण और समाज के अंतिम वर्ग से संबंधित विकास की घटनाओं का उल्लेख इस पुस्तक में है। यह पुस्तक शिक्षा क्षेत्र की प्रगति और बदलते भारत पर प्रकाश डालती है। यह विषय ठीक तरह से समझ में आए; इसके लिए मानचित्र, चित्र, अंक तालिकाएँ और पूरक चौखटों का उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त विविध उपक्रम भी सुझाए गए हैं।

इस पाठ्‌यपुस्तक द्‌वारा आप भविष्य की प्रतियोगिता परीक्षाओं का अध्ययन एवं इतिहास की उच्च शिक्षा की नींव रख सकते हैं। आपके अभिभावक इस इतिहास के साक्षी हैं। उनसे आप इस पाठ्‌यपुस्तक को अधिक विस्तार के साथ समझ सकेंगे।

राजनीती शास्त्र विषय के अंतर्गत वर्ष १९४५ से विश्‍व के प्रमुख प्रवाह, भारत की विदेश नीति की विकास यात्रा, भारत की सुरक्षा व्यवस्था व भारतीय सुरक्षा व्यवस्था के समक्ष चुनौतियों का अध्ययन करना है। भारत और अन्य देशों के राजनीतिक संबंध, संयुक्त राष्ट्र और संयुक्त राष्ट्र के शांति, रक्षा कार्य में भारत का योगदान आदि विषयों की चर्चा की गई है।

साथ ही; मानवाधिकार सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा और आतंकवाद जैसी कुछ अंतरराष्ट्रीय समस्याओं की पहचान प्रस्तुत पाठ्‌यपुस्तक में करवाई गई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर की सभी प्रकार की गतिविधियों का आकलन करने के लिए प्रस्तुत पाठ्‌यपुस्तक का पाठ्‌यांश उपयुक्त सिद्‌ध होगा।

इतिहास के अध्ययन से अतीत का आकलन होता है और वर्तमान से परिचित होते हैं। राजनीति शास्त्र के अध्ययन से हमें बोध होता है कि भविष्य में हमें किस दिशा में प्रगति करनी है । इसीलिए यह संयुक्त पाठ्‌यपुस्तक आधार सिद्‌ध होगी।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे
दिनांक : २८ अप्रैल २०१७ अक्षय तृतीया
भारतीय सौर दिनांक : ८ वैशाख १९३९

शिक्षकों के लिए

सर्वप्रथम मैं आपका अभिनंदन करता हूँ कि आप इतिहास विषय का अध्यापन और अध्ययन कर रहे हैं। इस वर्ष सन १९६१ से २००० तक के कालखंड का अध्यापन आपको नौवीं कक्षा की पुस्तक से करना है। इस पुस्तक का अध्यापन करना आपके लिए अधिक आनंददायी होगा क्योंकि इस पुस्तक की कुछ घटनाओं के आप गवाह हैं। जो घटनाएँ आपके आसपास घटीं, उन्हीं घटनाओं का समावेश इस पुस्तक में किया गया है। पुनः एक बार वह कालखंड आपके लिए जीवित हो उठेगा।

यह भारत का समग्र इतिहास है। पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ मर्यादा को ध्यान में रखते हुए चालीस वर्षों का सतत और संपूर्ण इतिहास पाठ्यपुस्तक में समाहित करना कठिन काम है। विद्‍यार्थियों के आयु वर्ग को ध्यान में रखते हुए उन्हें प्रभावित करने वाली घटनाओं का समावेश इस पुस्तक में करने का प्रयत्न किया गया है। कुछ प्रमुख घटनाओं के आधार पर आप अन्य घटनाओं की जानकारी विद्‍यार्थियों को अंतरजाल की सहायता से समझ के लिए प्रवृत्त कर सकते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक का केंद्रीय प्रयोजन यह है कि अभी-अभी स्वतंत्र हुआ देश विकास की ओर किस तरह अग्रसर होता है। यह देश विश्व में सबसे बड़ी लोकतंत्र प्रणाली चलाने वाला देश है। इस देश की उन्नति में राजनीतिक नेतृत्व, प्रशासनिक नेतृत्व और वैज्ञानिक, शिक्षा विशेषज्ञ तथा कलाकार का क्या योगदान है; यह बताने का प्रयत्न किया गया है। इसी के साथ-साथ; भारतीय नागरिकों की लोकतंत्र के प्रति आस्था और उसकी रक्षा के लिए यहाँ की सामान्य जनता द्‍वारा लड़ी गई लड़ाई; इस पुस्तक का महत्त्वपूर्ण भाग है। व्यक्ति की अपेक्षा समाज श्रेष्ठ है, राजनीतिक नेतृत्व की अपेक्षा देश बड़ा है, यही संदेश स्वातंत्र्योत्तर भारत में जनता ने दिया है। घटनाओं में निहित आशय का उद्‍देश्य विद्‍यार्थियों तक पहुँचना आपके सामने एक बड़ी चुनौती है। वर्तमान समय की आधुनिक प्रौद्‍योगिकी की सहायता से शिक्षक वर्ग इस चुनौती को सहजता के साथ पूरा कर सकेंगे; ऐसा विश्वास है।

हमने जिस कालखंड का अनुभव किया उसका अध्यापन करना यह पहली बार होने वाला है। यह एक ऐतिहासिक कार्य है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के निर्माण में हम भी कुछ योगदान दे सकते हैं; यह महत्त्वपूर्ण तथ्य विद्‍यार्थियों के मन पर प्रतिबिंबित करने के लिए यह पुस्तक उपयुक्त सिद्‍ध होगी। इसके लिए मानचित्र, चित्र, चौखटें और उपक्रम जैसे साधनों का उपयोग करना है किंतु हमारा लक्ष्य विद्‍यार्थियों के सम्मुख 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा' के आशय को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना है।

राजनीति शास्त्र विषय के अंतर्गत हम इस कक्षा में 'भारत और विश्व' के पारस्परिक संबंधों की समीक्षा करेंगे। आधुनिक समय में वैश्विक और अंतरराष्ट्रीय स्तर की गतिविधियों का परिणाम सभी देशों पर होता है। सूचना एवं प्रौद्‍योगिकी क्षेत्र में हुई की उन्नति के कारण राष्ट्रों के बीच व्यवहार और लेन-देन बढ़ गया है। भारत को केंद्र में रखकर गुत्थमगुत्थीवाले अंतरराष्ट्रीय संबंधों की जानकारी आपको विद्‍यार्थियों को करवानी है। उसकी शुरुआत अर्थात निकट के इतिहास की अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों और प्रवाह के आकलन द्‍वारा करवाकर देनी होगी। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का पाठ्यांश नया है। सहजता के साथ वह ग्रहण किया जा सके; इसके लिए पाठ्यांश की प्रस्तुति ज्ञानरचनावादी दृष्टि से की गई है; विषय में इसका निर्माण हो इसलिए आशय अलग पद्‍धति से प्रस्तुत किया गया है। विद्‍यार्थी अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने का प्रयास पहली बार कर रहे हैं इसलिए शिक्षक अध्यापन करते समय विविधतापूर्ण और अपारंपारिक स्रोतों का आधार लें। ऐसी पद्‍धतियों में परिणामकारी उपाययोजना के लिए इस पाठ्यपुस्तक में भरपूर अवसर है। विश्वशांति और सुरक्षा का संवर्धन, मानवाधिकारों के प्रति आदर, शांति एवं पारस्परिक विश्वास जैसे मूल्यों के प्रति और उसके आनुषंगिक रूप से होने वाली कृतियों के प्रति विश्वास दृढ़ करने का प्रयत्न शिक्षक करेंगे; ऐसी अपेक्षा है।

अनुक्रमणिका

स्वातंत्र्योत्तर भारत
(वर्ष १९६१ से वर्ष २००० तक)

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	इतिहास के साधन	१
२.	भारत : १९६० के बाद की घटनाएँ..........	५
३.	भारत के सम्मुख आंतरिक चुनौतियाँ	१०
४.	आर्थिक विकास	१५
५.	शिक्षा की विकास यात्रा.....................	२३
६.	महिला और अन्य कमजोर वर्गों का सशक्तीकरण	३१
७.	विज्ञान और प्रौद्योगिकी	३७
८.	उद्योग तथा व्यापार	४३
९.	बदलता जीवन : भाग १.....................	४७
१०.	बदलता जीवन : भाग २.....................	५२

S.O.I. Note : The following foot notes are applicable : (1) © Government of India, Copyright : 2017. (2) The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher. (3) The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line. (4) The administrative headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh. (5) The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified. (6) The external boundaries and coastlines of India agree with the Record/Master Copy certified by Survey of India. (7) The state boundaries between Uttarakhand & Uttar Pradesh, Bihar & Jharkhand and Chattisgarh & Madhya Pradesh have not been verified by the Governments concerned. (8) The spellings of names in this map, have been taken from various sources.

क्षमता विधान

क्र.	घटक	क्षमता
१.	इतिहास के साधन	❊ ऐतिहासिक साधनों का वर्गीकरण करना। ❊ ऐतिहासिक साधनों के अध्ययन में तत्कालीन घटनाओं की कल्पना करना एवं अनुमान करना। ❊ ऐतिहासिक संदर्भों का योग्य वाचन कर उसका अर्थ बताना। ❊ ऐतिहासिक वस्तु, दस्तावेज, पुस्तकें, सिक्के व इलेक्ट्रॉनिक जानकारी एकत्रित कर संग्रह करना। उसी प्रकार उनका वर्गीकरण विविध पद्धतियों से करना। ❊ ऐतिहासिक घटनाओं का अर्थ वस्तुनिष्ठ रीति से लगाना।
२.	राष्ट्र निर्माण की चुनौती : भाग १	❊ भारतीय स्वतंत्रता के बाद की गतिविधियों की ऐतिहासिक घटनाओं का क्रम योग्य पद्धति से बताना। ❊ भारत के सम्मुख आंतरिक चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना। ❊ भारत की आर्थिक नीतियाँ काल के अनुसार बदलती गईं, यह स्पष्ट करना। ❊ वैश्वीकरण के कारण हुए आर्थिक सुधारों के परिणामों की समीक्षा करना। ❊ निजीकरण, उदारीकरण तथा वैश्वीकरण के कारण भारतीय अर्थ व्यवस्था में हुए परिवर्तनों की कारण मीमांसा करना।
३.	राष्ट्र निर्माण की चुनौती : भाग २	❊ भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास के सोपान बताना। ❊ विविध सामाजिक समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु शिक्षा महत्त्वपूर्ण माध्यम है, यह बताना। ❊ समाज के दुर्बल घटकों के विकास के लिए विविध प्रयत्न एवं उनके महत्त्व पहचानना। ❊ स्वातंत्र्योत्तर भारत के विज्ञान तथा प्रौद्‌योगिकी की प्रगति के उदाहरण बताना। ❊ उद्‌योग और व्यापार क्षेत्र से संबंधित संगठनों की जानकारी प्राप्त कर उनका भारतीय अर्थ व्यवस्था पर परिणाम बताना। ❊ विज्ञान तथा प्रौद्‌योगिकी की प्रगति के संबंध में गर्व करना। ❊ अंतरजाल की सहायता से नए-नए शोधों की जानकारी प्राप्त करना।
४.	बदलता जीवन	❊ जनमत निर्माण तथा नगरीय समाज सक्रिय करने में प्रसार माध्यमों की भूमिका तथा जिम्मेदारियों को पहचानना। ❊ शहरीकरण एवं ग्रामीण जीवन की तुलना कर बताना। ❊ सामाजिक समता का समर्थन करने के संबंध में बोध निर्माण होना। ❊ वैज्ञानिक दृष्टिकोण आत्मसात करना।